Vol III Issue X July 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 10 | July. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X

Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

असम की प्राचीन चित्रशैली का इतिहास : एक समीक्षा

जोनटि दुवरा

सहकारी अध्यापिका, हिन्दी विभाग, गोलाघाट वाणिज्य महाविद्यालय,
ज्योति नगर, गोलाघाट (असम).

सारांश :

ईस्वी सन् की ग्यारहवीं शताब्दी के छोटे–छोटे चित्रो से चित्रित जो हस्तलिखित बौद्ध ग्रंथ आविष्कृत हुए हैं, वे प्राचीन ऐतिहासिक धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। बंगाल, बिहार और नेपाल में ऐसै कुछ चित्रित तालपत्र और आच्छादन पत्र अब तक प्राप्त हुए हैं।

बारहवीं शताब्दी के गुजरात में हस्तलिखित ग्रंथ की चित्रकला आगे बढ़ रही थी। गुजरात में चित्रकला की यह धारा सत्रहवीं शताब्दी तक चलती रही, उसके बाद इस धारा का रूपान्तर मुगल–राजपूत धारा के नाम से हुआ। पन्द्रहवीं शताब्दी से उत्तर भारत में वैष्णव आन्दोलन द्वारा प्रभावित चित्रकला राजपूत मुगल चित्रकला की प्रेरणास्त्रोत बनी। तुलसीदास के 'रामचरित मानस' जयदेव के 'गीत गोविन्द' प्राचीन गुजराती ग्रंथ' वसंत विलास', 'रागमाला' और 'बारह मासा' आदि ग्रंथों को चित्रकारों ने अपनी शैली के चित्रों से सुशोभित किया।

***प्रास्ताविक* :**

अचित्रों से सुसज्जित 'रामचरित मानस' की बहुत–सी पोथियाँ मिली हैं। जिस समय समूचा उत्तर भारत राधा–कृष्णा की प्रेमकथा से संबंधित गीतों से गुंजायमान हो रहा था, उस समय एक–सी प्रेरणा से प्रेरित होकर चित्रकारों ने भी अपनी तूलिकाओं से रंगकर भावों को मूर्त रूप देना प्रारंभ किया। इस दिशा में अठारहवीं शताब्दी की पहाड़ी चित्रशैली के चित्र बहुत सजीव दिखायी देते हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में गुजरात में पोथियों का चित्रित करने की प्रथा प्रचिलत थी। ताड़ के पत्रों पर लेखन और चित्रण का काम होता था। मुगल चित्रशैली के विकास के साथ–साथ गुजरात की पुरानी शैली का प्रभाव घटने लगा। 'उत्तराध्याय सूत्र' (रचनाकाल ई. स. 1591) 'गीत गोविन्द' (एन.सी.मेहता), 'चौर–पंचाशिका', 'कृष्ण लीला' (बोस्टन संग्रहालय में संग्रहित) तथा बारह मासा के चित्र मुगल राजपूत चित्रकला के विशेष नमूने माने जाते हैं। 'राग माला' के चित्र भी इस चित्रशैली के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं। सोलहवीं शताब्दी की विकोसोन्मुखी मुगल चित्रकला का चरम विकास सत्रहवीं शताब्दी के मध्य भाग में दिखायी देता है। इस शैली में फारसी चित्रकला का सीधा प्रभाव दृष्टिगत होता हैं। अठारहवीं शताब्दी में राजपूत चित्रकला से पहाड़ी, कांगड़ा आदि नयी शाखाएँ बनी।

वैष्णव सम्प्रदायों के प्रमुख ग्रंथ भागवत महापुराण के मूल, अनुवाद अथवा व्याख्यात्मक पोथियो को सचित्र करने का प्रयास संपूर्ण भारतवर्ष में कुछ न कुछ हो रहा था। 1948ई. में राजस्थान के उदयपुरवासी भट्टारक यशोवन्त नामक लिपिकार ने श्रीधर स्वामीकृत टीका सहित भागवत की जो प्रतिलिपि निकाली, वह बहुत से चित्रो से अलंकृत हैं। आजकल यह प्रतिलिपि पुणे के भंडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट में संरक्षित है। फारसी में किया गया सचित्र गद्यानुवाद भागवत भी इस संस्था में सुरक्षित है। इसके अनुवाद का समय 1853 ई. है। यह कार्य महाराणा प्रताप (1779–1803) की पृष्ठपोषकता में किया गया था। इस प्रति के दशम् स्कंध के चित्र शिल्पियों के लिए तथा औरों के लिए भी बड़े आकर्षक है। दशम् स्कंध की और दो चित्रित प्रतियाँ भी मिलती हैं। एक है सोलहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध गुजराती कवि 'भालण' कृत गुजराती पद्यानुवाद की सत्रहवीं शताब्दी की चित्रशैली से चित्रित प्रति, दूसरी है दो सौ चित्रो से शोभित गुजराती टीका सहित 1611 ई. की जोधपुर में लिखित प्रति।

Title: "*असम की प्राचीन चित्रशैली का इतिहास : एक समीक्षा*" , Source: Review of Research [2249-894X] *जोनटि दुवरा* yr:2014 | vol:3 | iss:10

असम की चित्रकला

(क) वैष्णव चित्रकला : असम के वैष्णव सम्प्रदाय के लोक–गीत, कविता, नाटक और मूर्तिकला की भांति चित्रकला के क्षेत्र में भी नवीन ललित कला की कल्पनाओं से अनुप्राणित थे। इन सभी क्षेत्रों में वैष्णव सम्प्रदाय के मुख्य नेता महापुरूष शंकरदेव असामान्य सुदक्ष व्यक्ति थे। शंकरदेव विषयक एक चरित ग्रंथ के अनुसार शंकरदेव ने 'चिहन यात्रा' नामक अभिनय के लिए स्वयं कागज पर सात वैकुण्ठों के चित्रों का निर्माण किया था। कहा जाता है कि एक बार उन्होंने कागज पर हिगुल और हरिताल से एक हाथी का चित्र खींचकर उसे काठ में लगाकर पृष्ठपोषक महाराज नरनारायण को उपहार के रूप में दिया था। एक सौ बीस हाथ लंबे एक कपड़े में श्रीकृष्ण की वृन्दावन लीला के चित्र उन्होंने करघे पर बनवाये और हर चित्र का नाम भी दिया फिर भी उनके जीवनकाल में चित्रकला का प्रचार और उसकी चर्चा संबंधी विस्तृत जानकारी हमें नहीं मिलती है।

नगांव जिले के बालि–सत्र में शंकरदेव के लिखे दशम् स्कंघ के विषयो को चित्र रूप में भी उपस्थित किया गया है। 'चित्र भागवत' नाम से परिचित इसका मुद्रित रूप पुराने धर्म ग्रंथ के चित्रों का एक सुन्दर उदाहरण सामने रखता है। मूल पोथी का रचनाकाल सुनिश्चित नहीं, तो भी कुछ लोगों का विचार है कि यह 1461 शताब्द (1539 ई.) का हो सकता है। बंबई के राजकीय संग्रहालय के एक अधिकारी डॉ. मोतीचन्द्र का अनुमान है कि ये चित्र ईसा की सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम अथवा अठारहवीं शताब्दी प्रारंभिक भाग में बने हुए हैं।

सत्रों से प्राप्त पोथियों के चित्रों में स्थानीय वातावरण तथा कला शैली का प्रभाव लक्षित हैं, फिर भी चित्रों में भारतीय चित्रशैली का ऐतिहासिक संपर्क अटूट है। इस दिशा में कुछ विशेषताएं देखने योग्य है। केश सहित भारतीय सिंह जैसे जानवरों का मूर्तिकला और चित्रकला में जो स्थान है, वह असम की चित्रकला में भी है। काल्पनिक होने पर भी सुन्दर आकृति के वृक्षों के चित्र भारतीय की भांति असम की चित्रकला में भी मिलते हैं। सीमाबद्ध शैली का आनुगत्य तथा सुषमा–बद्धता के कारण कुछ क्षेत्रों में कला अपने विकास मार्ग में बाधाग्रस्त होती है। इसी प्रकार सूक्ष्म विश्लेषणात्मक दृष्टि का अभाव होने पर भी चित्र भागवत के चित्रों में शिल्प नैपुण्य तथा कलात्मक सौंदर्य स्पष्ट है। रंगों में गाढ़ेपन की अधिकता भी एक विशेषता है।

शिल्पाचार्य नन्दलाल बसु के मतानुसार मेवारी और उड़ीसा की चित्रकला से इन चित्रो का सादृश्य है। अन्यान्य कला समालोचकों के मतानुसार इन चित्रों में ऐसी कुछ विशेषताएं हैं, जो ईसा की चौदवहीं शताब्दी के बीच की हस्तलिखित जैन पोथियों के चित्रो से समता रखती हैं। डॉ. मोतीचन्द्र का विचार है – "काव्यात्मक व्यंजनायुक्त अंकन कुशलता, सरल रचना रीति, नाटकीय कहानी तत्व और अपूर्व रंगों के व्यवहार के कारण इन चित्रों में सौंदर्य झलकता है, वह उदयपुर अथवा अन्य स्थानों के भागवतों की चित्रांकन शैली से अपनी शैली का पार्थक्य दिखा सकता है।"

उस समय चित्रांकन और लेखन का कार्य कागजों पर हुआ करता था। लाल अथवा नीले रंग की पटभूमि में साधारणतः चित्र खींचे जाते हैं। उस पटभूमि की बनावट वनुषाकार या महराबदार होती थी। घटना की पटभूमि के रूप में किसी यथार्थ दृश्य को दिखाने का प्रयास दिखायी नहीं देता है, अपितु कुछ पेड़–पौधो खीचे जाते अथवा विशेष ढंग से रंग–भर दिये जाते हैं। दृश्यांकन के संबंध में चित्रकार का मत सचेत नहीं था, उनमें त्रिआयामी ज्ञान का अभाव स्पष्ट है। पहाड़, वर्षा, नदी और झील के चित्रांकन में यथार्थ के साथ संपर्क नहीं दिखायी देता है। रथों का चित्र भी सामने झंडे वाला पीढ़ा जैसा ही है।

शरीर के गठन में स्पष्टता और अभिजात्य हैं। खड़े व्यक्तियों के चित्र अधिकतर अभंग–भंगी में और कुछ त्रिभंग–भंगी में हैं। अतिभंग–भंगी रूप कहीं नहीं मिलता है। आँखे मछली जैसी अथवा बाल सिहत धान की आकृति से साम्य रखती है। भौहें अनषाकार और नाक भी बहुत स्पष्ट खींची गयी है। छाती चौड़ी और कमर पतली होकर वट पत्र–सी बन गयी हैं दाढ़ी और मूछों से मरी मुखाकृति में दैत्यों के रूप दिखायी देते हैं। पैरों का अंकन भी स्पष्ट है। पोशाकें आडम्बरहीन होती हुई भी आकर्षक हैं। धोती और कंधे से लटकती चादर पुरूषों की पोशाक है। बेल–बूटेदार साडी और ब्लाउज औरतों की पोशाक हैं। पुरूषों के सिर पर की मुगलाई टोपी राजपूत और मुगलो की पगड़ी से समता रखती है।

पशु–पक्षियो के चित्र में स्पष्टता के साथ सहानुभूतिशीलता भी नजर आती है। इस दिशा में वास्तविकता का संपर्क कुछ है, जो प्राकृतिक दृश्यो तथा वर्णन शैली से संबधित भी है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि भागवत पुराण के विषयो को लेकर जो चि. बनाये गये था, वे असम के किसी सत्र में ही बनाये गये हैं। जिन स्थानों स`अब ये चित्र मिलते हैं, उन स्थानों में उनका निर्माण होना भी असंभव नही है। सत्रो में चित्र बनाने की परंपरा थी और यह परंपरा अब भी कुछ बची हुई है। सॉचि–पात (अगुरू के पेड़ की खाल से लिखने योग्य बनायी हुई पट्टी) और कागज पर धर्म ग्रंथो का लिखना एक कर्तव्य–सा मान लिया गया था। लिपिकार यदि कलाकार या कलाप्रेमी हो, तो हर पृष्ठ पर वर्णित विषय से संबंधित चित्र भी खींचते जाते थे। यदि लिपिकार फुक चित्र नहीं बना सकता था तो दूसरों से छोटे–मोटे चित्र खिंचवाते थे। वनी सत्रों में अपने–अपने चित्रकार और मूर्तिकार भी होते थे। मूर्तियों और चित्रों के बनाने वाले ऐसे शिल्पकारो को असम में खनिकर कहते हैं। असम में वैष्णव सम्प्रदाय की पोषकता में इस प्रकार चित्रकला का विकास हुआ था, इस धारा की चित्रकला में राज्याश्रम का प्रभाव नही था।

राजानुग्रह से संबंधित चित्रकला में धर्म निरपेक्षता है, किन्तु धर्म ग्रंथों की चित्रकला में कुछ अपनी विशेषताएँ मिलती हैं। धर्म विषयक चित्रकला को सत्राश्रित और राज्याश्रित इन दो भागो में विभक्त कर सकते हैं। सत्राश्रित चित्र

भागवत पुराण के अतिरिक्त अन्याय ग्रंथों में भी मिलते हैं। असम के एक अन्य महत्वपूर्ण धर्म ग्रंथ 'कीर्तन–घोषा' की चित्रित बहुत–सी प्रतियाँ बहुत से सत्रों में तथा व्यक्तियों के पास मिली हैं, इन ग्रंथों की चित्रशैली भी दशम् स्कंध भागवत की चित्रशैली से मिलती–जुलती है।

आहोम राज्य की राजधानी गड़गाँव शहर के पास 'बारे–घर' सत्र में श्रीरामदेव कायस्थ रचित ऊषा–अनिरूद्ध के प्रेमाख्यान मूलक 'कुमार हरण काव्य' का चित्रित रूप संरक्षित है। कागज पर चित्रांकित माधव कंदली कृत अस्म्पूर्ण लंका–कांड रामायण और राम सरस्वती कृत महाभारत के उद्योग पर्व की एक–एक प्रति मिली है। चित्रों के अलंकारो में यथास्थान सच्चा सोना भी मढ़ दिया गया है। वे दोनों ग्रंथ अब तक व्यक्तिगत अधिकार में हैं। डिब्रूगढ़ शहर से कुछ दूरी पर स्थित दिनजय के मायामारा सत्र के अधिकार (मीहत) ने अपने सत्र में संरक्षित 'श्रीभागवत मत्स्य चरित' नामक पोथी मेरे पास भेजी थी। उस पोथी के भीतर के भागों में कोई चित्र नहीं था, किन्तु काठ के बने ऊपर के ढक्कन में और कुछ भीतर के अन्य पत्तों में भी विष्णु के दशावतार, अनन्त नाग, हयग्रीव, ब्रह्म आदि के चित्र बने हुए हैं। इन चित्रो को देखकर ऐसा लगता है कि सर्व भारतीय चित्रशैली से निका रूप काफी मिलता–जुलता है। श्रीधर स्वामी कृत टीका सहित भागवत पुराण की प्रतिलिपि नगांव के एक सत्र में मिली है। उस पोथी के चारों तरफ हाशियों में चित्र खींचे हुए हैं। संक्षेप में कहें तो कह सकते हैं कि धर्म विषयक पोथियों को चित्रो से सुशोभित करने की प्रथा असम में प्रचलित थी। हाशियो में बेल–बूटे या चित्रयुक्त पोथियों को 'लताकाटा' पोथी कहते हैं। बरपेटा सत्र में रामाकान्त द्विज कृत बनमाली देव का चरित ग्रंथ इसलिए आकर्षक हैं क्योंकि उसमें शंकरदेव, माधवदेव, दामोदरदेव, बनमालीदेव, चैतन्यदेव और राजा चक्रध्वज सिंह प्रभृति इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियो के चित्रांकन का प्रयास किया गया है। इसके चित्रकार का नाम 'विजय–खनिकर' मिला है, जो सत्र–व्यवस्था के भीतर का व्यक्ति था। चित्रों में व्यक्ति चित्रण यथार्थपरक नहीं है। शंकरदेव प्रभृति अन्य धर्म–गुरूओं के भी जीवन–चरित्रो से कुछ चित्र खीचने का प्रयास इसमें दृष्टिगोचर होता है, किन्तु उनमें चित्रशैली अथवा वस्तुनिष्ठता मे किसी भी दृष्टी से विशेषता दिखायी नहीं देती है।

साँचिपात की पोथियों में चित्रकला

भारतवर्ष के अन्यान्य राज्यों के राजाओं की भांति सत्रहवी और अठारहवी शताब्दी के असम में आहोम तथा कांच राजवंशो ने भी कला की पृष्ठपोषकता की थी, उनकी पृष्ठपोषकता में युगान्तर आया। दंरगी राजा की पोषकता मे सूर्याचाड़ि देवज्ञ रचित 'समुन्द्र नारायण वंशावली' या दरंग 'राजा–वंशावली' पद्य में लिखा चित्रित इतिहास है आहोम राजाओ की पोषकता में चित्रित पुस्तकों में सुकुमार बरकाथ का 'हस्ती विद्यार्णव', कविराज चक्रवर्ती का 'शंखचूड़ वध' जयदेव का 'गीत गोविन्द' और हरिहर विप्र का 'लव–कुश–युद्ध' विशेष महत्वपूर्ण हैं।

दरंग–राजवंशावली में समकालीन जीवन के चित्र खींचे गये हैं। परंपरा के प्रभाव के कारण धार्मिक चित्रकार से इसमे संपर्क दिखायी पडता है। युद्ध में व्यवहृत बड़ी नावे और ऐसे वि,यों के चित्र समूह भागवत की चित्रशैली की भांति इस पोथी में भी आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किये गये हैं। संगीत में उपयोग किये जाने वाद्यों के चित्र भी ध्यान से देखने योग्य हैं। इस तरह युद्ध के साधन, बंदूक, तलवार, तीर–धनुष आदि के चित्र भी इस पोथी में हैं। चन्द्रातप–युक्त राजसिंहासन और कई मंजिलों के राजभवन के चित्र आहोम राजधानी की चित्रकला से अपना संपर्क दिखाई हैं। जानवरों के चित्र भागवत पुराण के चित्र जैसे आकर्षक नहीं बने हैं, किन्तु युद्ध के दृश्यों में अपनी विशेषता तथा सुन्दरता है। चित्रों की रेखाओं से चित्रकार के रंग विषयक सूक्ष्म ज्ञान का परिचय मिलता है। भागवत पुराण के चित्रो की तरह इसमें मेहराब नहीं है। नृत्य गीतों के दृश्य इस पोथी में बहुत सजीव बने हैं। धर्म निरपेक्ष चित्रधारा में रहे हृदयाकर्षक गुणो की दृष्टि से देखा जाए तो दिलवर और दोषाई द्वारा अंकित हस्ती विद्यार्णव के चित्र बेजोड़ माने जा सकते हैं।

'हस्ती विद्यार्णव' के संबंध में पंडित हेमचन्द्र गोस्वामी का अभिमत है – "पोथी के पत्ते अपूर्व कला–कौशलपूर्ण रंगीन चित्रों से भरे हुए हैं। ये चित्र विभिन्न प्रकार के हाथियों के और आहोम राजसभा के दृश्यों के हैं। कुछ चित्रकला और इतिहास की दृष्टि से बहुत मूल्यवान है। आहोम राजा द्वारा श्येन (बाज) पक्षी का खेल देखना, शोभायात्रा में हाथी की पीठ पर राजा का जाना आदि चित्र स्वर्ण मण्डित है। जल चित्रण की पद्धति से बनाये इन चित्रों के रंग और उसकी चिकनाहट की सुन्दरता अपेक्षित सावधानी न बरतने पर भी अब तक सुरक्षित हैं।"

असम के धर्म निरपेक्ष इन चित्रों की रचनाशैली में मुगलकाल का प्रभाव है। संभवतः इसीलिए इस शैली में कुछ नवीनता तथा विशेषताएँ भी दिखायी देती हैं। इन विशेषताओ में दृश्य चित्रण की विशेषता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस दिशा में 'हस्ती विद्यार्णव' का स्थान सर्वोपरि है। परे रंग का लहराता हुआ समतल क्षेत्र और नीले रंग की पहाड़ियों का दृश्य चित्रण इस पोथी में बहुत सुन्दर बना है। इसमे पेड़–पौधो के चित्र केवल भावनात्मक नहीं, वरन् वास्तव जैसे दिखायी पड़ते हैं। पहाड़ से निकली और मछलियो से भरी नदी तथा विविध रंगो के बादलो से घिरे आकाश की पृष्ठभूमि में चित्रित पहाड़ियॉ, कलाकार की निपुणता का प्रमाण सामने रखती हैं। कलाकारों ने अपनी कला के द्वारा समकालीन जीवन के चित्र उपस्थित करने का प्रयास किया है। राजसभा, रानी सहित राजसभा में राजा, राजकीय शोभायात्रा, नृत्य गीत और मल्ल युद्ध आदि के वस्तुनिष्ठ चित्रांकन देखने लायक बने है। इन चित्रों में जीवन की गतिशीलता और आशा भरी सुन्दरता का भाव प्रकट होता है। जमीन तक लटकता हुआ पहनावा और चमकते हुए अलंकार आदि का चित्रण विशेष आकर्षक बन पड़ा है। कपड़ा इतना महीन दिखाया गया है कि कपड़ो के नीचे भी शरीर का गठन नजर में आवें। औरतों के केशभरण का रूप भी अच्छा है। तंत्र–मंत्र से संबंध रखने वाले ब्राह्मण, पुरोहित, ऊंट, सिंह, सूअर और हाथी

आदि विभिन्न श्रोणियों के जानवर हंस, उल्लु गिद्ध आदि पक्षी, पर्व–त्यौहार आदि के समय उपयोग में आने वाले विभिन्न वर्गो के सरीसृप तथा मछली आदि के चित्र बड़े मनोरंजक हैं। पोथी में ग्रंथकार सुकुमार बरकाथ, चित्रकार दिलवर और दोषाई, पोषक राजा शिव सिंह और रानी अम्बिका देवी तथा उनके सभासदों के भी चित्र अंकित किये गए हैं। दिक् पालों में से एक की पोशाक से यूरोपीय जैसा अनुमान होता है, ब्रह्मदेश या मान देश के एक राजा का चित्र भी खींचा गया है। विविध प्रकार के हाथियों के चित्राकन के बहाने से चित्रकारी ने पृष्ठपोषक राजा शिव सिंह को बहुत बार दर्शको के सामने उपस्थित किया है। शिल्प कुशलता तथा सूक्ष्म कलात्मक बोध इस पोथी की विशेषताएँ हैं। असम की चित्रकला के कुछ अनोखे नमूने इस पोथी में मिलते हैं।

अन्तनाथा भाषा में अनूदित भागवत पोथी अष्टम् .....देश में मिले हैं। पोथी के ये दोनों ....पन्ने सुन्दर तथा चमकदार चित्रो से शोभित हैं। इस दिशा में यह चित्रशैली 'हस्ती विद्यार्णव' की बराबरी कर सकती है। ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में असम पर मानों के आक्रमण तथा अधिकार हो जाने पर ऐसा संभव हुआ है, ऐसा लगता है। उस समय असम के बहुत लोगों को बंदी बनाकर भी ले गये थे। असम से उस समय भागने वालों के साथ भी ऐसी चीजें बाहर जा सकती है। इसमें इस पोथी के चित्रों से भी समकालीन राजसभा तथा संगीत चर्चा विषयक ऐतिहासिक धारण होती है। इसमें नृत्य का एक बहुत सुन्दर दृश्य अंकित हुआ है। ये चिह्न आहोम राजसभा से संबधित किसी व्यक्ति द्वारा अंकित लगते हैं।

जयदेव के 'गीत गोविन्द' की (कविराज चक्रवर्ती द्वारा अनूदित) पोथी में जो चित्र मिले हैं, वे भी इस शैली के हैं। किन्तु कला की दृष्टि से ये चित्र 'हस्ती विद्यार्णव' के समान उच्चकोटि के नहीं माने जा सकते तो भी इस पोथी मे आदेग और सौंदर्य का अभाव नहीं है। कविराज चक्रवर्ती, राजा रूद्र सिंह और राजा शिव सिंह दोनों के शासनकाल में था। राजा शिव सिंह की राजसभा के दृष्य तथा उत्तर भारतीय रागमाला के चित्रण द्वारा भारतीय स्वर माधुर्य व्यक्तिकरण को साकार रूप देने का प्रयास इसमें भी आकर्षक बन पड़ा है। असम में भागवत चित्रांकन की रीति का उपयोग इसमे भी देखा जा सकता है। वन–उपवनों के चित्रो में कविराज चक्रवर्ती द्वारा अनूदित 'गीत गोविन्द' के वर्णन की अपेक्षा जयदेव के मूल वर्णन के अनुसार सुन्दर वातावरण के दृश्य उपस्थित किये गये हैं।

कविराज चक्रवर्ती के 'शंखचूड़ वध' को भी चित्रित रूप दिया गया था। 'ब्रह्मवैबर्त पुराण' से पुचु इसी कहानी के वर्णन से संबंधित चित्रों के समकालीन जीवन के भी बहुत से चित्र इसमें हैं। राजसभा के पंडितो के साथ राजा गदाधर सिंह का चित्र इस पोथी में मिलता है। एक झील और मंदिर के पास राजा रूद्र सिंह का चित्र खीचा गया है, साथ ही एक पखावज बजानेवाला है। जयंतिया और कछारी राज्यों के नायक, अपने राज्य के तीनों मंन्त्री तथा अन्यान्य अधिकारी और सेना विभाग के लोगो के साथ भी रूद्र सिंह का चित्र इसमें अंकित हुआ है, यह पोथी संपूर्ण नहीं मिली है।

आहोम राजवंश की राणी माहिंन्द्री देवी से 'कामरूप अनुसंधान समिति' द्वारा 'लव कुश युद्ध' की दो प्रतियॉ संग्रह की गयी हैं। 'लव–कुश' युद्ध का रचनाकाल चौदहवी–पन्द्रहवी शताब्दी हैं, किन्तु इसको चित्रित रूप देने का काम अठारहवीं शताब्दी के तीसरे चौथे दशक में राजा शिव सिंह के शासनकाल मे किसी दरबारी चित्रकार द्वारा किया गया था। इन चित्रों में ध्यान देने योग्य बात यह है कि मानवकृतियों में चिरत रूपायन का प्रयास भी छिपा हुआ है। यो तो इन चित्रो में सजीवता नही है। मुगलाई ढंग की पगड़ी, घने जंगल के स्थान पर सजे हुए पेड़, खाट जैसे रथों में ऊंचाई का अभाव आदि ऐसे कुछ लक्षण असम की चित्रकला में दिखायी देते हैं। युद्ध क्षेत्र की लाशो के चित्रण में उपयुक्त परिप्रेक्ष्य का अभाव है।

एक अन्य समकालीन चित्रित पोथी है 'धर्म पुराण' की पांडुलिपि। उसकी मूल पांडुलिपि लंदन के ब्रिटीश संग्रहालय में है। एक अनुलिपि गुवाहाटी के इतिहास तथा पुरातत्व विभाग में संग्रहीत है। इस संग्रहीत पोथी को देखकर चित्रण पद्धती के संबंध में टीक–टीक समझना संभव नहीं है। संक्षेप में कहा जाये तो ऐसा कह सकते हैं कि इस पोथी की चित्रशैली में कोई खास विशेषता नहीं है। इस पोथी क लेखक का नाम कवि चन्द्र द्विज है। राजा शिव सिंह और उनकी रानी अम्बिका देवी के शासनकाल में (1735 ई.) इसकी रचना हुई थीं और शायद रचनाकाल में ही चित्रित की गयी थी। राजा शिव सिंह और उनकी रानी प्रथमेश्वरी की राजसभा के पंडित अनन्त आचार्य रचित 'आनन्द लहरी' में भी कुछ आकर्षक चित्र मिलते हैं।

आहोम शासनकाल के अधिकारियों में चित्र विद्या की चर्चा हुआ करती थी। रूद्र सिंह के समय में इसकी चर्चा ऊंचे दर्जे की थी और यह अंग्रेजों के शासनकाल तक चली। इसका प्रमाण गनश्याम खारघरीया फुकन द्वारा लिखित 'कालिका पुराण' के चित्रों से मिलता है।

अंत में यह कहना उचित होगा कि असम की प्राचीन चित्रशैली का इतिहास आज भी उल्लेखनीय है और होती रहेगी।

जोनटि दुवरा
सहकारी अध्यापिका, हिन्दी विभाग, गोलाघाट वाणिज्य महाविद्यालय,ज्योति नगर, गोलाघाट (असम).

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net